# स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय,नांदेड

## कला संकाय के अंतर्गत पीएच.डी. (हिन्दी) उपाधि

## हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध की रूपरेखा

# "राम संजीवन प्रसाद के उपन्यासों में समाज के बदलते स्वरूप"

शोधछात्रा

**माने रंजना चंद्रकांत**

एम.ए., बी.एड. एम.फिल. (हिंदी)

शोधनिर्देशक

**प्रा.डॉ. सौ. एस.एस. उप्पे**

हिंदी विभागाध्यक्ष,

उज्वल ग्रामीण महाविद्यालय, घोणसी

ता. जळकोट, जि. लातूर

**मार्च, 2016**

# राम संजीवन प्रसाद के उपन्यासों में समाज के बदलते स्वरूप

## विषयानुक्रमणिका


**प्रथम अध्याय**

राम संजीवन प्रसाद के उपन्यास साहित्य का कथ्य

**द्वितीय अध्याय**

राम संजीवन प्रसाद के उपन्यासों में चित्रित आदीवासी जनजीवन

**तृतीय अध्याय**

राम संजीवन प्रसाद के उपन्यासों में समाज के बदलते स्वरूप

**चतुर्थ अध्याय**

राम संजीवन प्रसाद के उपन्यासों में चित्रित यथार्थवाद

**पंचम अध्याय**

राम संजीवन प्रसाद के उपन्यासों का शिल्प विधान

उपसंहार

निष्कर्ष

# राम संजीवन प्रसाद के उपन्यासों में समाज के बदलते स्वरूप

**पृष्ठभूमि :**

हिंदी साहित्य कि सबसे लोकप्रिय विधा उपन्यास है। हिंदी उपन्यासों का उद्भव आधुनिक साहित्य में भारतेंदु से माना जाता है। 19 वीं सदी में गद्य की विविध विधाओं की शुरूवात हुयी। उसमें उपन्यास एक प्रमुख विधा है। इस विधा के अंतर्गत व्यक्ति के चरित्र का बहुआयामी चित्रण होता है। 'उपन्यास' नाम का प्रयोग भारतेंदु काल से ही होने के कारण उसके लिए अन्य शब्द भी व्यवहत है। द्विवेदी काल में उपन्यास के लिए उपन्यास शब्द का प्रयोग होने लगा। पहले उपन्यास को आख्यायिका भी कहा जाता है। **"आख्यायिका कथा, खण्डकथा, परिकथा तथा कथानिकेति मन्यन्ते गद्यकाव्य च पंचधा।"**

प्रारंभिक अवस्था में भी उपन्यास की प्रवृत्ति सामान्य जीवन के निकट रूककर उसकी यथार्थता की छाया-चित्रों या प्रतिबिंब उपस्थित करना ही रही है। हिन्दी में उपन्यासों के पूर्व बंगला साहित्य में यह अंग काफी विकसित हो चुका था और कदाचित बंगला साहित्य की देखादेखी में भी उपन्यासों का सूत्रपात हुआ। प्रारंभ में बंगला के उपन्यासों का हिन्दी अनुवाद भी अत्याधिक हुआ है।

उपन्यास की धारा उतनी ही प्रशस्त और विस्तृत है जितनी कि जीवन की धारा। बहुमुखी प्रतिभा के धनी युगश्रेष्ठा, युग द्रष्टा कहते हुए उन्होंने **"मैं उपन्यास को मानव-चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ।"** ऐसा मानव चरित्र पर प्रकाश ड़ालना और उसके रहस्य को खोलना ही उपन्यास का मुलतत्त्व है। उपन्यास के प्रचलन, विकास एवं सृजन का श्रेय पश्चिमी देशों के लेखकों को ही है। जिनसे प्रेरणा लेकर हिंदी में उपन्यास की रचना की जाने लगी। डॉ.मूलर ने इस मत की पुष्टि करते हुए लिखा है-**"उपन्यास मूलत: मानवीय अनुभव का निरूपण है। चाहे वह यथार्थ हो अथवा आदर्श और इस प्रकार उपन्यास में अनिवार्यत:**

**जीवन की आलोचना रहती है।”** मानवीय अनुभव का निरूपण और ऐसा यथार्थ, आदर्श का उचित समन्वय होने के कारण प्रेमचंदजी पाठकों में अति लोकप्रिय हुए हैं।

मुंशी प्रेमचंद बहुमुखी प्रतिभा के धनी अपने हिन्दी साहित्य जगत को केंद्र में रखकर स्वाधीनता के लिए संघर्षरत भारत का सजीव और मार्मिक चित्र अंकित करके हिंदी उपन्यास के विकासक्रम की सुविधा के लिए तीन चरणों में विभक्त किया है। (1) प्रेमचंद पूर्व युग (सन 1901 से 1914 तक) (2) प्रेमचंद युग (1914 से लेकर 1936 तक) (3) प्रेमचंदोत्तर युग (सन 1936 से लेकर अब तक)।

उपन्यास साहित्य के विकास के पूर्व संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और हिन्दी साहित्य में कथातत्त्व प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहा और यही इस विधा का उपकारक तत्त्व भी सिद्ध होने लगा। प्रेमचंदपूर्व उपन्यासों की कथावस्तु ऐयारी, तिलस्मी, जासूसी, रहस्यप्रधान, कौतुहल और वासनामूलक प्रेम पर आधारित थी। इस काल के उपन्यास सुधारणावादी एवं उपदेशवादी प्रवृत्ति के परिचालित थे और उनके लेखन का उद्देश्य जनता का मात्र मनोरंजन करना था। हिन्दी उपन्यास आधुनिक समय की उत्पत्ति है। प्रेमचंद के आगमन से हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में नये युग का प्रारंभ हुआ। इन्होंने हिंदी उपन्यास को विशिष्ट दिशाएँ प्रदान की। प्रेमचंदजी ने पहली बार अपने उपन्यासों में सामाजिक जीवन की समस्याओं को कलात्मक अभिव्यक्ति दी। प्रेमचंदजी पाठकों में अति लोकप्रिय हुए हैं। इनके बाद हिंदी उपन्यास का विकास बहुत तेजी से हुआ। इस युग में उपन्यास की विविध धाराएँ अनेक दिशाओं की ओर विभक्त होकर बही। प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों का वर्गीकरण निम्न वर्ग में बनाया जा सकता है। 1) मनोविश्लेषणवादी उपन्यास 2) ऐतिहासिक उपन्यास 3) साम्यवादी उपन्यास 4) आँचलिक उपन्यास 5) प्रयोगवादी उपन्यास।

स्वातंत्र्योत्तर युग में प्रमुखता जीवन की व्याख्या ही बदल गई और नये मूल्यों के प्रति साहित्यकारों का विश्वास बढ़ गया। हिंदी उपन्यास साहित्य में नयी धाराएँ प्रवाहमान हुई। उनमें 1) स्त्री विमर्श 2) दलित विमर्श 3) आदिवासी विमर्श इसके अलावा महानगरीय

सभ्यता से पीड़ित लोग, पारिवारिक तनाव, गाँव का क्रूर यथार्थ, विकास के नाम पर हो रहा जनता का शोषण, उत्पीड़न, दमन, संस्कृति के विकृत मूल्य निम्न मध्यवर्ग की आर्थिक विवंचना, नये मूल्य आदि को लेकर उत्तरार्ध का साहित्य उभरता हुआ दिखाई देता है।

हिंदी उपन्यास तत्कालीन परिवेश की उपज है। इस देश की मूल्यहीन राजनीति सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, भ्रष्टाचार आदि के यथार्थवादी चित्रण ने मुझे काफी प्रभावित किया। हिंदी उपन्यासों में समकालीन समस्याओं में महानगरीय जीवन के बढ़ते मूल्य विघटन का चित्रण, जातीय, धार्मिक भेदभाव के परिणामस्वरूप बढ़ती सांप्रदायिकता का उग्र स्वरूप, नारी चेतना, बढ़ती भोगवादी प्रवृत्ती, पारिवारिक जीवन की घूटन, तनाव, ग्रामीण जीवन के बदलाव, मँहगाई, गरीबी, बेरोजगारी, पूँजीपती वर्ग की विसंगतियाँ, विकास की नीति का ग्रामीणोंद्वारा हो रहा शोषण आदि समकालीन विभिन्न समस्याओं का यथार्थ चित्रण उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में प्रकट करने के लिए कलम चलाई है।

**विषय चयन की प्रेरणा :**

हिंदी उपन्यासों में जीवन का समग्र चित्रण पूरे समाज के बदलते स्वरूप और यथार्थता के साथ होने के कारण अन्य विधा की तुलना में उपन्यास विधा के प्रति मेरी अधिक रूचि रही है। कुछ दिनों से बल्कि स्नातक और स्नातकोत्तर कक्षा से ही 'गोदान' जैसे उपन्यास बड़ी तन्मयता से पढी । हिंदी उपन्यासों में विविध विचारधाराओं का प्रवेश हुआ जैसे- आदिवासीयों की यातना, मानवद्वारा मानव के विनाश, उत्पीड़न, दमन, मूल्यहीन राजनीति, सामाजिक, आर्थिक विषमता, भ्रष्टाचार आदि के बदलाव उपन्यासकारों ने उपन्यासों में किया है। इन सब घटनाओं का मानवी समाज जीवन पर जो प्रभाव पड़ा है, इस सब समाज के बदलते स्वरूप के बारे में सूक्ष्म अध्ययन करना चाहती हूँ। इसीलिए मैंने क्रमश: उनका साहित्य पढ़ा। उनके साहित्य ने मुझे प्रभावित किया और मैंने निश्चय किया कि शोध कार्य करूँगी तो "राम संजीवन प्रसाद के उपन्यासों में समाज के बदलते स्वरूप"

पर और शोधकार्य का विषय बनाना चाही। इसी विषय को लेकर मैं आदरणीय श्रद्धेय गुरूवर्य डॉ.उप्पे एस.एस. मॅडम के सामने प्रकट करने के बाद पी-एच.डी शोधकार्य के लिए उपरोक्त विषय के पक्ष-विपक्ष में चर्चा कर एवं मेरी जिज्ञासा को देखकर इसी शोध शीर्षक को उन्होंने तुरंत अनुमति दी ।

**अनुसंधान का लक्ष्य :**

शोध शब्द से ही यह बात स्पष्ट हो जाती है कि नये तथ्यों का अन्वेषण करना ही शोध का सही लक्ष्य है। एक निश्चित लक्ष्य की और जाने के लिए मनुष्य को निरंतर कर्मशील रहना पड़ता है। इसलिए मैंने पूर्ण लगन के साथ इस शोध का एक निश्चित लक्ष्य तय किया है।

राम संजीवन प्रसाद के उपन्यासों में समाज के बदलते स्वरूप को विडंबनापूर्ण स्थिति का चित्रण किया गया है। कोयलांचल, जातिवाद, सामंतीवादी क्रुरता, अनैतिक दुष्कर्म, ज्योतिष, ऐय्याशी और स्त्रियों मेहनतकशों का शोषण, दमण, जीवन की वास्तविकता मालिकों का अनिष्ट व्यवहार, खान कामगारों का आक्रोश, पूँजीपति वर्ग द्वारा संथालों का शोषण, दरिद्रता, अंधश्रद्धा, रीति-रिवाज, डाकुओं का आतंक, थारूओं की संस्कृति, पुलिस का आतंक, झारखंड मुक्ति आंदोलन, बेरोजगारी की  समस्या आदि इन सब मानवी जीवन के समस्याओं को पूरी यथार्थता के साथ उद्घाटित करना इस शोधप्रबंध का मुख्य लक्ष्य है और इसी लक्ष्य प्राप्ति के लिए इस शोधकार्य को निम्न अध्यायों में विभक्त किया है।

**अनुसंधान की पद्धतियाँ**

साहित्य भाव जगत का प्रतिनिधित्व करता है। साहित्यिक अनुसंधान में प्रकट तथ्यों के द्वारा उसके भावपरक और अनुभूतिजन्य सत्य को जाना जाता है। ज्ञान का क्षेत्र इतना विस्तृत है की जिसकी प्राप्ति के लिए एवम् अध्ययन के लिए विभिन्न शोध पद्धतियों की आवश्यकता हो जाती है। राम संजीवन प्रसाद के उपन्यासों में विभिन्न परिवेश की उपज होने के कारण इसका क्षेत्र विस्तृत होने के कारण विभिन्न शोध पद्धतियों का प्रयोग किया

जायेगा। जिनमें आलोचनात्मक, तुलनात्मक, व्याख्यानात्मक, सर्वेक्षणात्मक आदि विषय की तह तक जाने के लिए विभिन्न ग्रंथालयों एवं दस्तावेजों का सहारा लिया जायेगा।

प्रस्तुत शोधकार्य विश्वविद्यालय के समय सामी निर्धारण में रहकर ही किया जायेगा। साथ ही सामग्री संकलन से लेकर सामग्री विभाजन तक और पढ़ने के पश्चात ही शोध विषय पर चिंतन एवं मनन किया जायेगा। विश्वविद्यालय के नियम के अधीन रहकर आवश्यकतानुसार शोध प्रबंध के अध्याय शीर्षकों में परिवर्तन किया जायेगा।

**प्रथम अध्याय - राम संजीवन प्रसाद के उपन्यास साहित्य का कथ्य**

इस अध्याय के अंतर्गत जीवन परिचय, कथ्य की परिभाषा, किसानगढ़ के अहेरी, सर्कस, सावधान!, नीचे आग है, धार, पाँव तले की दूब, जंगल जहाँ शुरू होता है, सूत्रधार, रानी की सराय, डायन, निष्कर्ष इस प्रकार आदि का विवेचन किया जायेगा।

**द्वितीय अध्याय - राम संजीवन प्रसाद के उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जनजीवन**

इस अध्याय में आदिवासी का स्वरूप, अर्थ, महत्त्व, किसानगढ़ के अहेरी, सावधान, नीचे आग है, धार आदी उपन्यासों का अध्ययन किया जाएगा।

**तृतीय अध्याय - राम संजीवन प्रसाद के उपन्यासों में समाज के बदलते स्वरूप**

इस अध्याय में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, पारिवारिक समस्या पर अध्ययन किया जाएगा।

### 3.1 सामाजिक समस्या

इसमें रुढ़ियों परंपराओं का चित्रण, पारिवारिक रिश्तों में अलगाव, संघर्ष, टूटन, विघटन, नारी समस्या, तनाव, अकेलापन, शोषण, जातिय भेदभाव, ग्रामीण जीवन में हो रहे परिवर्तन आदि का चित्रण इस अध्याय के अंतर्गत किया जायेगा।

### 3.2 राजनीतिक समस्या

इसके अंतर्गत किसानों की ज्वलंत समस्या, पूँजीपतिद्वारा शोषण, भूमिहीन मजदूरों की समस्या, शासन-जनता का संघर्ष, जाति, धर्म, प्रांतवाद, अपना-पराया का अध्ययन किया जायेगा।

### 3.3 धार्मिक समस्या

इसमें धार्मिक भेदभाव, आस्था एवं अनास्था, धर्म संकल्पना, भूत-प्रेत (डायन), जादू-टोना, अन्धविश्वास, रुढ़ी-मान्यताएँ आदि का अध्ययन किया जायेगा।

### 3.4 आर्थिक समस्या

इसके अंतर्गत समाज की स्वार्थी वृत्ति, बढ़ती मँहगाई, बेरोजगारी, आर्थिक गुलामी, आर्थिक विषमता, मनुष्य की लालची प्रवृत्ति, अर्थ के कारण बनते-बिघडते रिश्ते आदि पर अध्ययन किया जाएगा।

### 3.5 पारिवारिक समस्या

इसमें यौन शोषण, व्यसनाधिनता की समस्या, प्रदूषण की समस्या, लैंगिक अत्याचार आदि पर अध्ययन किया जायेगा।

**चतुर्थ अध्याय - राम संजीवन प्रसाद के उपन्यासों में चित्रित यथार्थवाद**

इसके अंतर्गत यथार्थवाद शब्द का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, तत्त्व आदि का अध्ययन किया जायेगा।

**पंचम अध्याय - राम संजीवन प्रसाद के उपन्यासों का शिल्प विधान**

इस अध्याय के अंतर्गत भाषा और शिल्प लेखन शैली, कथागत बिखराव, पात्रों का चरित्रगत अध्ययन आदि का अध्ययन किया जायेगा।

**उपसंहार**

इस अध्याय के अंतर्गत सभी अध्यायों का संक्षेप में मूल्यांकन करते हुए निष्कर्ष को स्पष्ट किया जाएगा।

**संदर्भ ग्रंथ**

अ) मूल ग्रंथ

| | रचना | प्रकाशन वर्ष |
|---|---|---|
| 1) | किसनगढ़ के अहेरी | 1981 |
| 2) | सर्कस | 1984 |
| 3) | सावधान ! नीचे आग है | 1986 |
| 4) | धार | |
| 5) | पाँव तले की दूब | 1995 |
| 6) | जंगल जहाँ शुरू होता है | 2000 |
| 7) | सूत्रधार | 2001 |

**बाल उपन्यास**

1) रानी की सराय

2) डायन

**सहाय्यक ग्रंथ**


1) आधुनिक हिंदी उपन्यास -सं.डॉ.नामवरसिंह

2) हिंदी उपन्यासों में समाज परिवर्तन - डॉ.शेख रब्बानी

3) सामाजिक विघटन - डॉ.अग्रवाल गोपाळकृष्ण

4) हिंदी के सामाजिक उपन्यासों में नारी - डॉ.कुलकर्णी रेवा

5) यशपाल के उपन्यासों में सामाजिक कथ्य-गुप्ता चमनलाल

6) समस्यामूलक उपन्यासकार-डॉ.भटनागर महेंद्र

7) हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा - डॉ.मिश्र भगीरथ

8) हिंदी के सामाजिक उपन्यासों में नारी - डॉ.कुलकर्णी रेवा

9) हिंदी उपन्यास साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन - तिवारी रमेश

10) हिंदी उपन्यासों का शिल्पविधान - डॉ.शर्मा प्रदीप

**पत्र-पत्रिकाएँ**

1) हंस

2) वागर्थ

3) नया ज्ञानोदय

4) आलोचना

5) समीक्षा

6) जनसत्ता

7) आज-कल

शोधकर्ता

**रंजना चंद्रकांतराव माने**
देवणी जि.लातुर

शोधनिर्देशिका

**प्रा.डॉ.सौ.संगिता शरणप्पा उप्पे**
हिंदी विभागाध्यक्ष
उज्वल ग्रामीण महाविद्यालय,घोणसी
ता. जळकोट जि.लातूर